''नहीं, रहन दें। ये चाय है! न शक्कर, न दूध।''

नोनी ने मुंह बिचकाया। कोने में चूल्हा सुलग रहा था गन-गन। आंच के पास बैठी अम्मा हाथ-पांव में तेल चुपड़ रही थी। बाबू की नींद अभी टूटी नहीं थी, वो भी शायद अम्मा के बुलाए के इंतजारी में था। अम्मा दस बजे तक निकलेगी काम पे। जब से दिदिया घर आई है, फिर से चंगा हो गई है अम्मा। बनाव-सिंगार की भी कोई कमी नहीं। मेम साहबों का दिया बाली-चूड़ी पहनकर कमर मटकाती चार घरों का काम कर चार बजे तक घर लौटती है। खनका ले अम्मा और दो-चार साल ये चूड़ी-पायल, फिर देखूंगी।

नोनी मन ही मन मुस्कुराती हुई आंगन में निकल

नोनी बिल्लियों को परे धकेलकर किचन में दाखिल हुई। कौन-सा काम पहले करे, काफी बनाए या बिल्लियों को दूध दे। उसने गैस जलाकर दूध चढ़ाया। सफेद गाढ़ा मलाईदार दूध। नोनी ललचाई। हूं... जानवरों के लिए मलाईदार दूध और मनई के लिए ठेंगा... नोनी बुदबुदाई।

आई। अभी पौ पूरी तरह से फटी नहीं थी। ठंड की सुबह, छः बजने पर भी घुप अंधेरा। स्वीटी मेम ठीक छः बजे दरवाजा खोल देती है। बड़ी तेवर वाली है स्वीटी मेम। अंगरेजी स्कूल में मास्टरनी, बड़ी रौब दिखलाती है। अब नोनी के पास एकदम टैम नहीं, वह उड़ने लगी और पलक झपकते पहुंच गई एक सौ दस यानी स्वीटी मेम के क्वार्टर के सामने गेट खुला हुआ था। अन्दर घुसते ही मेम की तीनों बिल्लियां दौड़ आईं और नोनी के पैरों से लिपटने लगीं। म्याऊं... म्याऊं...

...ऊं हूं, परे हट... नोनी फुसफुसाई। ...म्याऊं... म्याऊं... ढीठ बिल्यिां हट नहीं रही थी...

''आ गई, नोनी?''

''पहले काफी बना फटाफट''

''.....'' नोनी किचन में भागी।

बिल्लियों को दूध दे दे नोनी''

नोनी बिल्लियों को परे धकेलकर किचन में दाखिल हुई। कौन-सा काम पहले करे, काफी बनाए या बिल्लियों को दूध दे। उसने गैस जलाकर दूध चढ़ाया। सफेद गाढ़ा मलाईदार दूध। नोनी ललचाई। हूं... जानवरों के लिए मलाईदार दूध और मनई के लिए ठेंगा... नोनी बुदबुदाई। बिल्लियां पैरों से लिपटी जा रही थीं- ''जा जा भाग...''

'अच्छा रुक, पहले तुम तीनों को दूध देती हूं'... नोनी ने पहले आधा कप कुनकुने दूध में पानी मिलाकर एक पतीली में बिल्लियों को पीने के लिए दे दिया।

''क्या हुआ नोनी, स्कूल जाना है कि नहीं? जल्दी कर'', मेम चिल्लाई।

नोनी मुस्कुराई। अगर जल्दी थी तो बना न लेती अब तक- नोनी मन ही मन बोली।

''शक्कर कम डालना...''

नोनी पहले तो एक कप मलाईदार दूध गटक गई, फिर काफी बनाने लगी। एक कप अपने लिए भी, फिर जूठे बर्तनों के बीच छिपा दी और चल पड़ी मेम के पास...।

''लाई? दे... काफी बनाने में इतनी देर क्यों लगी, जैसे यह काफी न हुई, बीरबल की खिचड़ी हुई...!''

''....'' नोनी जाने लगी।

''नोनी, ... रुक तो जरा''... नोनी रुक गई।

''आटा सान लेना...''

''.....''

''सब्जी काटकर पानी में भिगो देना, समझी!''

''.....''

''अब जा...''

''.....''

''जा न, खड़ी क्यों है? ज्यादा नखरे मत दिखा, बर्तन आज बहुत कम है...''

बर्तन कम है का मतलब दूसरा काम मत्थे चढ़।

नोनी किचन में आई। छुपाई गई झागदार कॉफी निकाली, फिर एक घूंट में पी गई।

नोनी बर्तन मांजने लगी।

''आवाज़ मत कर लड़की, कान भन्ना जाता है...''

नोनी हंसी। बिना आवाज के भी भला बर्तन मांजा जाता है! खुद मांज कर दिखाए!

घड़ी में अभी आठ नहीं बजे थे। नोनी का काम खतम। खड़ी हो गई मेम के सामने...

''क्या हुआ?''

''.....''

''तू क्या जादूगरनी है?... अभी आठ भी तो नहीं बजा और सारा काम कर लिया।'' मेम भरपूर अंगड़ाई लेकर उठ बैठी- ''जरा बालों में तेल तो लगा दे... वो देख फ्रिज के ऊपर रखा है, ले आ...''

नोनी तेल ले आई।

''ले लगा, एकदम पोर-पोर में समा जाए ऐसा लगाना।''

नोनी तेल लगाने बैठी। काले बालों के नीचे कहीं-कहीं पके बाल चांदी की तरह चमक रहे थे। ये लो मेम तो बुढ़ा गई!